जो दुख मेरी सैयन को, तब सुख कैसा मोहे।
हम तुम एक वतन के, अपनी रूह नहीं दोए।। ३३ ।।

यदि मेरे सुन्दरसाथ को किसी प्रकार का भी दुःख होता है तो मुझे कैसे सुख हो सकता है, क्योंकि हम सभी एक घर के हैं तथा एक श्यामाजी के अंग हैं।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। २५९ ।।

भी कहूं मेरी सैयन को, जो हैं मूल अंकूर।
सो निज वतनी सोहागनी, पिया अंग निज नूर।। १ ।।

मैं अपने सुन्दरसाथ को जो परमधाम के निसबती (सम्बन्धी) हैं और मेरे घर की सुहागिनियां हैं, हम एक धनी की अंगना हैं, इसलिए और भी कहती हूं।

पार पुरुख पिया एक है, दूसरा नाहीं कोए।
और नार सब माया, यामें भी विध दोए।। २ ।।

अक्षर के पार पुरुष तो केवल हमारे धनी ही हैं और दूसरा पुरुष तो कोई है ही नहीं। यहां पर तो सारा माया का ब्रह्माण्ड है। उसमें भी दो तरह की सृष्टियां हैं।

जो रूह असलू ईश्वरी, दूजी रूह सब जहान।
पर रूह न्यारी सोहागनी, सो आगे कहूंगी पेहेचान।। ३ ।।

एक तो ईश्वरी सृष्टि की आत्माएं हैं और दूसरी संसार सब जीव सृष्टि का है। इन दोनों से ब्रह्मसृष्टि अलग है। इनकी पहचान आगे कहती हूं।

सैयां सुख निज वतनी, ईश्वरी को सुख और।
दुनी भी सुख होसी सदा, आगे कहूंगी तीनों ठौर।। ४ ।।

ब्रह्मसृष्टि के यहां आने पर घर का सुख है। ईश्वरी सृष्टि को और दूसरे तरीके का सुख है। दुनियां की भी अखण्ड मुक्ति होगी। आगे तीनों के ठिकाने बताऊंगी।

ए लछन सैयां अंकूरी, जो होसी इन घर।
ए वचन वतनी सुनके, आवत हैं तत्पर।। ५ ।।

जो परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी उनके लक्षण इस तरह से होंगे कि वह अपने घर की बात सुनते ही माया को छोड़कर पिया के चरणों में आ जाएगी।

अटक रह्या साथ आधा, जिनो खेल देखन का प्यार।
ए किया मूल इन खातिर, जो हैं तामसियां नार।। ६ ।।

हमारे आधे सुन्दरसाथ यहां तामसी स्वभाव के हैं। इनको खेल देखने की इच्छा बाकी थी। यह ब्रह्माण्ड उनके लिए ही बनाया गया है।

भूल गईयां खेल में, जो सैयां हैं समरथ।
प्रकास पिया का मुझ पे, कहे समझाऊं अर्थ।। ७ ।।

ऐसे समर्थ मोमिन खेल में आकर भूल गए हैं। श्री प्राणनाथजी का ज्ञान मेरे पास है। इसे समझाकर कहूंगी।

Nijanand App

सबन को भेली करूं, दृढ़ कर देऊं मन।
खेल देखाऊं खोल के, जिन विध ए उतपन।। ८ ।।

मैं सबको इकट्ठा करूंगी और सब संशय मिटाकर उनके हृदय में दृढ़ता लाऊंगी। सारे रहस्य जिनसे ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति हुई है, को खोलकर खेल दिखाऊंगी।

ए खेल है जोरावर, बड़ो सो रचियो छल।
ए तब जाहेर होएसी, जब काढ़ देखाऊं बल।। ९ ।।

यह खेल बड़ा शक्तिशाली है, इस माया ने ऐसा छल रच रखा है। जब इसके बल को नष्ट कर दूंगी तो दुनियां को पता चलेगा कि यह माया तो कुछ भी नहीं थी।

तुम नाहीं इन छल के, छल को जोर अमल।
सांची को झूठी लगी, ऐसो छल को बल।। १० ।।

हे मोमिनो! तुम माया के नहीं हो, पर माया के नशे का यहां बड़ा जोर है, सच्ची ब्रह्मसृष्टि को माया पकड़कर बैठी है, ऐसी छल बल वाली है।

तुम आइयां छल देखने, भिल गैयां मांहें छल।
छल को छल न लागहीं, ओ लेहेरी ओ जल।। ११ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! तुम खेल देखने के लिए आई हो और खेल में मिल गई हो (खेल बन गई हो)। माया के जीवों को इसका असर नहीं होता, क्योंकि वह इसी मोहजल की लहरें हैं।

ए झूठी तुमको लग रही, तुम रहे झूठी लाग।
ए झूठी अब उड़ जाएसी, दे जासी झूठा दाग।। १२ ।।

इस झूठी माया ने तुम्हें पकड़ रखा है और माया को तुमने पकड़ रखा है। यह झूठी माया तो खत्म हो जाएगी, परन्तु तुमको दाग लग जाएगा।

हांसी होसी अति बड़ी, जिन मोहे देओ दोस।
कमी कहे मैं ना करूं, पर तुमें छल हुआ सिरपोस।। १३ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि उस समय (परमधाम में) तुम्हारी बड़ी हंसी होगी, इसलिए मुझे दोष मत देना। मैं तो किसी तरह की कमी कहने में नहीं कर रही हूं। पर तुमने ही माया से सिर ढांप लिया है।

मांग लिया खसम पें, ए छल तुम देखन।
जो कदी भूलियां छल में, तो फेर न आवे ए दिन।। १४ ।।

तुमने खेल देखने की मांग धनी से की थी। अब यदि खेल में भूल गई तो फिर से ऐसा दिन हाथ में नहीं आएगा।

तुम मुख नीचा होएसी, आगूं सैयां सबन।
ए हांसी सत ठौर की, कोई सैयां कराओ जिन।। १५ ।।

सब ब्रह्मसृष्टियों के सामने तुम्हारा मुख नीचा होगा, इसलिए हे ब्रह्मसृष्टियो! अपने अखण्ड घर परमधाम में ऐसी हंसी कोई मत करवाना।

Nijanand App

दुख ले चलसी इत थें, नहीं आवन दूजी बेर।
तिन क्यों मुख ऊंचा होएसी, जो पिउसों बैठी मुख फेर।। १६ ।।

अपने धनी से मुख फिराकर मत बैठो। नहीं तो परमधाम में तुम्हारा मुख कैसे ऊंचा होगा। यहां दूसरी बार तो आना नहीं है, इसलिए धनी से मुख फिरा कर मत बैठो। चलते समय दुःख साथ ले चलोगे?

तुम सुध पिउ ना आपकी, ना सुध अपनों घर।
नाहीं सुध इन छल की, सो कर देऊं सब जाहेर।। १७ ।।

तुमको अपने आपकी, पिया की, घर की और इस माया की खबर नहीं है। वह सब मैं तुम्हें बता देती हूं।

मैं देखाऊं तिन विध, ज्यों होए पेहेचान छल।
जब तुम छल पेहेचानिया, तब चले न याको बल।। १८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मैं तुमको इस तरह से माया दिखाऊंगी जिससे तुम्हें इस माया रूपी छल की पहचान हो जाए। जब तुम माया की पहचान कर लोगे तो इसकी ताकत तुम्हारे सामने नहीं चलेगी।

अब देखो या छल को, जो देखन आइयां एह।
प्रकास करूं इन भांत का, ज्यों रहेवे नहीं संदेह।। १९ ।।

अब इस माया को देखो यदि तुम देखने के लिए आए हो। इसकी इस तरह से तुम्हें पहचान कराऊंगी जिससे कोई संशय नहीं रह जाएगा।

अन्धेर सब उड़ाए के, सब छल करूं जाहेर।
खोलूं कमाड़ कल कुलफ, अन्तर मांहें बाहेर।। २० ।।

सब अज्ञान दूर करके माया की पहचान कराती हूं। इसके अन्दर और बाहर की कुल हकीकत जाहिर करूंगी। इसके बन्द दरवाजे, ताले और उसके खोलने की युक्ति बता देती हूं।

॥ प्रकरण ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ २७९ ॥

खेल के मोहोरों का प्रकरण

अब निरखो नीके कर, ए जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखलावें खसम।। १ ।।

हे ब्रह्मसृष्टियो! (सुन्दरसाथजी) जिस खेल को देखने आई हो उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरतखंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

यहां की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

Nijanand App